



✎ Basilio Gimo, David Ker  
 Carol Liddiment  
 Nandani  
 Hindi  
 Level 2



दरियाई घाई के बल यरु नही हीते

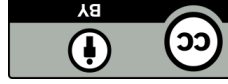
# Storybooks Mauritius



[global-asp.github.io/storybooks-mauritius](https://global-asp.github.io/storybooks-mauritius)  
 दरियाई घाई के बल यरु नही हीते

Written by: Basilio Gimo, David Ker  
 Illustrated by: Carol Liddiment  
 Translated by: Nandani

This story originates from the African Storybook ([africanstorybook.org](https://africanstorybook.org)) and is brought to you by Storybooks Mauritius in an effort to provide children's stories in Mauritius's many languages.



This work is licensed under a Creative Commons Attribution 3.0 International License.  
<https://creativecommons.org/licenses/by/3.0>



एक दिने, खरगोश नदी किनारे घूम रहा था।





दरियोई घोड़े ने नहीं देखा कि खरगोश भी वहीं है उसने गलती से खरगोश के पैरों पर अपना पैर रख दिया। खरगोश दरियोई घोड़े पर चिल्लाने लगा, “तुम दरियोई घोड़े! तुम देख नहीं सकते कि मेरे पैरों पर अपना पैर रख रहे हो?”



खरगोश खुश था कि दरियोई घोड़े के सारे बाल जल गए। और उस दिने से, आग के डर से, दरियोई घोड़ा पानी से दूर नहीं गया।





खरगोश मैदान में लगी आग के पास गया और बोला  
“जाओ, आग! दरियोई घोड़े को जला दो जब वह  
घास खाने पानी से बाहर आए। उसने मेरे पैरों को  
कुचला है!” आग ने उत्तर दिया, “कोई समस्या नहीं,  
खरगोश मेरे दोस्त। मैं वही करूँगी जो तुमने कहा।”



बाद में, दरियोई घोड़ा नदी से दूर घास खा रहा तभी,  
“बाप रे!” आग की लपटें धधकने लगीं। लपटें  
दरियोई घोड़े के बाल जलाने लगीं।